بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-23.02.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ी. का संक्षिप्त वर्णन, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के स्तर एवं पदवी के बारे में ग़ैरों की अभिव्यक्तियां तथा पाकिस्तान एवं यमन के अहमदियों और फ़लिस्तीनियों के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 23 फ़रवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज मैं पेशगोई मुस्लेह मौऊद के कुछ आयामों का वर्णन करूँगा। जैसा कि हर अहमदी जानता ह तथा हर साल इस पेशगोई के पूरा होने पर जलसे भी आयोजित किए जाते हैं। यह 20 फ़रवरी 1886 की पेशगोई है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक विभिन्न गुणों वाले बेटे के जन्म की सूचना दी गई थी परन्तु इसके विषय में बयान करने से पहले मैं बच्चों तथा कुछ युवाओं को भी इस सवाल का जवाब देना चाहता हूँ जो यह कहते हैं कि जब हम जन्म दिन नहीं मनाते तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. का जन्म दिवस क्यूँ मनाया जाता है। इस बारे में स्पष्ट हो जैसा कि मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के जन्म को दिवस के रूप में नहीं मनाया जाता बल्कि पेशगोई के पूरा होने पर जलसे किए जाते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. का जन्म तो 12 जनवरी 1889 का है। वालिदैन को पढ़ कर बच्चों को बताना भी चाहिए, समझाना भी चाहिए कि पेशगोई मुस्लेह मौऊद क्या है। यह एक महान भविष्य वाणी है जो पिछले ग्रन्थों के अनुसार, जिनकी पिछले नबियों ने भी सूचना दी और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद की पेशगोई के अनुसार अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह घोषणा करने का निर्देश दिया था।

यह एक लम्बी पेशगोई है। इस भविष्य वाणी में उस लड़के क गुण बयान किए गए हैं जिनमें से एक दो का मैं वर्णन किए देता हूँ। फ़रमाया- वह अति बुद्धिमान एवं विवेक शील होगा। वह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा। वह बन्दियों को स्वतंत्रता दिलाने का कारण होगा। ये एक लम्बी पेशगोई की कुछ बातें ह। फिर हमने देखा कि इसमें वर्णित समय के अन्दर वह लड़का पैदा हुआ तथा पेशगोई की पूरे पचास अथवा बावन बातों की पुष्टि करने वाला बना। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. की ख़िलाफ़त के काल का प्रत्येक दिन इस भविष्य वाणी के पूरा होने की शान को प्रकट कर रहा है तथा अहमदिया जमाअत की उन्नति का हर एक दिन इसका रौशन प्रमाण है। इस पेशगोई के संदर्भ में मैं न्याय प्रिय ऐसे लोगों की गवाहियाँ पेश करता हूँ जिनका जमाअत से कोई सम्बंध नहों है तथा ये इस बर्रे-सग़ीर (द्वोप) के जाने माने व्यक्तित्व हैं।

एक शोधक, लेखक, साहित्यकार, पत्रकार तथा इतिहासकार मौलाना ग़ुलाम रसूल साहब मेहर ने शेख़ अब्दुल माजिद साहब को बताया कि आप लोगों की किसी किताब में उस महामान्य इंसान के कारनामों की पूरी जानकरो नहीं मिलती। हमने उन्हें निकट से देखा है, कई बार भेंट हुई है, मुस्लिम समाज के लिए उनका अस्तित्व पूर्णत्या बलिदान स्वरूप था। साम्प्रदायिकता का पक्षपात मैंने उनके अस्तित्व में तनिक भी नहीं देखा, वे अत्यंत बुद्धिमान थे। खेद है कि मुसलमानों ने मिर्ज़ा साहब रज़ी. की क़दर नहीं की। अति घोर आंधियों के बावजूद मैंने मिर्ज़ा साहब रज़ी. को कभी निराश एवं निषक्रिय नहीं देखा।

लाला भीम सैन के पुत्र जनाब लाला कुंवर सैन साहब पूर्व चीफ़ जज कशमीर ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. का सम्बोधन जिसका शीर्षक है 'अरबी ज़बान का मक़ाम अलसिना आलम में' है, के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने भाषण में कहा कि जा लैक्चर दिया गया, वह अत्यधिक ज्ञान तथा दार्शनिक शान अपने अन्दर रखता है। मुझे आशा है इस लैक्चर का प्रभाव मेरे हृदय पर लम्बी अवधि तक क़ायम रहेगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. तो सांसारिक शिक्षा की दृष्टि से प्राईमरी पास भी नहीं थे, इस शिक्षा से अल्लाह तआला ने उन्हें परिपूर्ण किया था जैसा कि अल्लाह तआला ने वादा किया था तथा ग़ैर भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के ख़लीफ़ः होने के कुछ दिन बाद एक अमरीकी पादरी क़ादियान आया तथा कुछ महत्त्व पूर्ण धार्मिक सवाल पेश करते हुए कहा कि आजतक मुझे मुसलमानों का बड़े से बड़ा विद्वान इन सवालों का संतोष जनक जवाब नहीं दे सका। मैं इन सवालों को आपके ख़लीफ़ः साहब रज़ी. के सामने पेश करने के लिए विशेष रूप से आया हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने अत्यंत धैर्य एवं शांति के साथ उन सवालों को सुना तथा ऐसे संतोष जनक उत्तर दिए कि पादरी कहने लगा कि मैंने आजतक ऐसी विवेक पूर्ण वार्ता तथा ऐसा प्रमाणिक भाषण किसी मुसलमान के मुंह से नहीं सुना। ऐसा लगता है कि तुम्हारा ख़लीफ़ः बहुत बड़ा स्कालर है तथा विश्व धर्मों पर इसकी दृष्टि अत्यंत गहरी है। यह कह कर उसने बड़े सम्मान पूर्वक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के हाथ को चूमा तथा वापस चला गया।

सियासत नामक समाचार पत्र ने लिखा कि धार्मिक मतभेद की बात को छोड़ कर देखें तो जनाब बशीरुद्दीन महमूद साहब रज़ी. ने लेखकों के मैदान में जो काम किया है वह अपनी समृद्धता तथा उपयोगिता की दृष्टि से प्रशंसा योग्य है।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर साहब गोल मेज़ कान्फ्रंस लंदन के हवाले से अपने हमदर्द नामक अख़बार में लिखते हैं कि यह आभार नहीं होगा कि जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद तथा उनकी इस सुसंगठित जमाअत का वर्णन इन पंक्तियों में न करें जिन्होंने अपना सम्पूर्ण ध्यान अक़ीदे के मतभेद के बिना मुसलमानों के हित के लिए आरक्षित कर दिया है। ये प्रतिष्ठित लोग यदि इस समय एक ओर मुसलमानों की राजनीति में भाग ले रहे हैं तो दूसरी ओर मुसलमानों के संगठन, तबलीग़ एवं व्यापार में भी अत्यंत संघर्ष के साथ व्यस्त हैं। वह समय अब दूर नहीं जबकि इस सुसंगठित समुदाय की कार्य शैली सामान्यतः पूरे इस्लाम के मानने वालों के लिए तथा विशेष रूप से उन लोगों के लिए (जो बड़े बड़े मम्बरों में बैठ कर, लीडर बन कर, बड़े ऊँचे दावे करते हैं परन्तु भीतर से ये केवल उनके बड घटिया प्रकार के दावे हैं) उनके लिए ये मार्ग दर्शक साबित होंगे।

डाक्टर अल्लामा मुहम्मद इक़बाल साहब के हवाले से ये बातें भी रिकार्ड में मौजूद हैं कि 24 मार्च 1927 को लाहौर में जलसा हुआ जिसकी अध्यक्षता अल्लामा इक़बाल ने की। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने वहाँ तक़रीर फ़रमाई जिसके बाद अल्लामा साहब ने कहा कि ऐसी तक़रीर लम्बी अवधि के बाद लाहौर में सुनने में आई है। विशेषतः जो क़ुर्आन शरीफ़ की आयतों से मिर्ज़ा साहब ने निष्कर्ष निकाला है वह तो अति उत्तम है। मैं अपनी तक़रीर को अधिक देर तक जारी नहीं रख सकता ताकि मुझे इस तक़रीर से जो आनन्द प्राप्त हो रहा है वह प्रभाव रहित न हो जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने 1919 में लाहौर में 'इस्लाम में मुख़ालफ़त का आग़ाज़' शीर्षक से एक असाधारण लैक्चर दिया था। सय्यद अब्दुल क़ादिर साहब प्रधान अध्यापक इस्लामिया कालिज लाहौर ने अपने अध्यक्ष पद के भाषण में बयान किया कि यह सम्बोधन अत्यंत ज्ञान वर्धक है, मुझे भी इस्लाम के इतिहास में कुछ रूचि है तथा मैं दावे से कह सकता हूँ कि क्या मुसलमान तथा क्या ग़ैर मुसलमान, थोड़े ही इतिहासविद हं जो हज़रत उसमान के दौर के मतभेद की तह तक पहुंच सके तथा इस गम्भीर एवं पहले गृहयुद्ध के उपद्रव को समझने में सफल हुए। हज़रत मिर्ज़ा साहब को न केवल गृहयुद्ध के फ़ितने को समझने में सफलता मिली बल्कि उन्होंने अत्यंत स्पष्ट एवं निरन्तर शैली में इन घटनाओं को बयान फ़रमाया है जिनके कारण ख़िलाफ़त की संस्था लम्बे समय तक अस्थिर रही। मेरा विचार है कि ऐसा प्रमाणिक लेख इस्लाम के इतिहास से रूचि रखने वाले दोस्तों की नज़र से नहीं गुज़रा होगा।

दमिश्क़ का अलउमर नामक अख़बार 10 अगस्त 1924 ई. 'मेहदी दमिश्क़ में' नामक शीर्षक में लिखता है कि आपको अत्यंत गहरा शोध करने वाला विद्वान तथा सब धर्मों तथा उनके इतिहास एवं दर्शन शास्त्र का गूढ़ ज्ञान एवं अध्ययन रखने वाला तथा अल्लाह की शरीअत की हिकमत और दर्शन शास्त्र का ज्ञान रखने वाला व्यक्तित्व पाया।

विख्यात पत्रकार तथा राजनीतिज्ञ मियाँ मुहम्मद शफ़ी ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के निधन पर लिखा कि मिर्ज़ा महमूद अहमद ने ख़िलाफ़त की गद्दी संभालने के बाद जिस तरह अपनी जमाअत को संगठित किया और जिस तरह सदर अंजुमन अहमदिया को एक क्रि या शील एवं जानदार संस्था बनाया, इससे उनमें अत्यंत सशक्त संगठन की प्रतिभा का पता चलता है यद्यपि उनके पास किसी यूनिवर्सिटी की डिग्री नहीं थी परन्तु उन्होंने प्राईवेट तौर पर अध्ययन करके अपने आपको वास्तव में अल्लामा कहलाने के योगय बना लिया था। मिर्ज़ा साहब अत्यंत सुलझे हुए सम्बोधन कर्ता तथा निपुण लेखक थे तथा हर एक उस अवसर को तुरन्त उपयोग में लाते थे जिससे जमाअत की उन्नति के मार्ग खुलते हों।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने विभिन्न शीर्षकों पर जमाअत का तथा सामान्य रूप में मुसलमानों का मार्ग दर्शन किया, उनकी पुस्तकें कई मोटी मोटी जिल्दों में उपलब्ध हैं, ख़ुत्बात हैं। पुराने रिकार्ड में से अप्रकाशित नोट्स अथवा ख़ुत्बात तथा तक़रीरों में से क़ुर्आन करीम की तफ़सीरें मिल रही हैं, वे भी इन्शाअल्लाह तआला प्रकाशित हो जाएँगी। अनेक पुस्तकें अंग्रेज़ी भाषा में भी प्रकाशित हो चुकी हैं जिनको उर्दू नहीं आती उन्हें इस ज्ञान के भंडार से लाभान्वित होने का प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इस ज्ञान के ख़ज़ाने से लाभ प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- आजकल पाकिस्तान में जमाअत के सामने विरोध की दोबारा लहर शुरु हुई है। राजनेता एवं मौलवी जो चुनाव में हारे हैं अथवा अपनी इच्छा के अनुसार परिणाम उन्हें नहीं मिले उनकी एक बड़ी संख्या फ़साद फैलाने के लिए फिर अहमदियों पर हमले कर रही है। इस लिए अहमदियों को जहाँ सावधान होना चाहिए वहाँ दुआओं एवं सदक़ा देने पर भी अत्यधिक ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला अहमदियों को सुरक्षित रखे।

यमन के अहमदियों के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लिए भी सुविधाएँ पैदा फ़रमाए। उनके अनेक लोग बन्दी बनाए गए हैं तथा क़ैद में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनको जल्दी इस क़ैद से रिहाई फ़रमाए। फ़लिस्तीनियों के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उन पर भी रहम फ़रमाए तथा बड़ी शक्तियों के अत्याचार से उनको मुक्ति प्रदार करे।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने घाना में जमाअत की स्थापना पर सौ साल पूरे होने पर आयोजित किए जाने वाले सौ साला जलसा सालाना की सफलता के लिए दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि कल इन्शाअल्लाह यहाँ से जलसे में मेरी लाईव तक़रीर भी होगी, अल्लाह तआला हर दृष्टि से बरकत पूर्ण फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا
مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ
اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ
وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131